मारवाड़ी विरासत

आईएसबीएन : 978–81–929767–1–6
प्रथम संस्करणः सितम्बर 2022 तक
पृष्ठ संख्या : 350

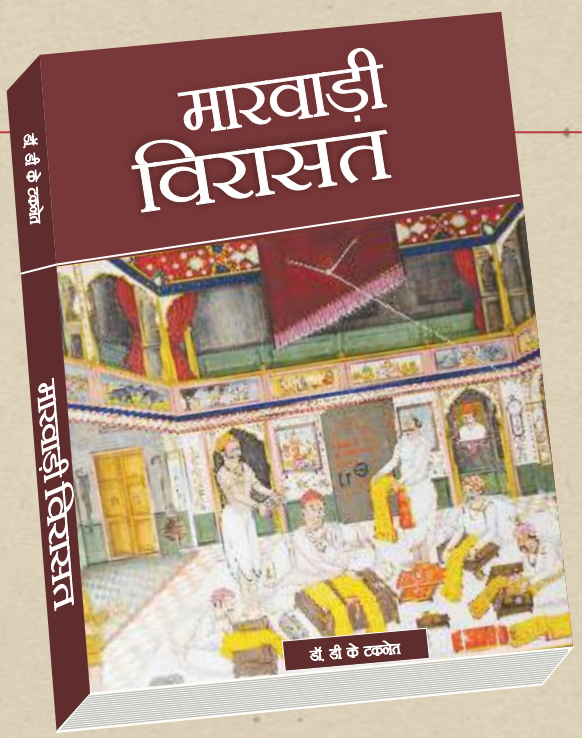

वैश्य समुदाय भारत का सबसे पुराना व्यापारिक समुदाय है, जो वैदिक युग के आरम्भ से ही अपनी अनूठी लगन और कर्मठता से देश के लिए धन–सम्पदा पैदा करता रहा है। इस वैश्य समुदाय से ही उपजा मारवाड़ी समाज बहुत से राजा–महाराजाओं के मंत्रियों, सलाहकारों और दीवानों के रूप में, राजकाज में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। देश की सबसे पहली परोपकारी और धर्मार्थ संस्थाओं की स्थापना का श्रेय भी इसी समाज को जाता है।

मारवाड़ी राजपूताना, हरियाणा, मालवा और आसपास के क्षेत्रों से देश के सभी हिस्सों में फैलते चले गए। यह पुस्तक मारवाड़ियों की गौरव–गाथा का एक दिलचस्प और जीवंत चित्र प्रस्तुत करती है। नए और अनजाने क्षेत्रों की कठिन चुनौतियों से जूझते हुए, अन्य समुदायों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करते हुए, सफल होने की अपनी क्षमता पर अटूट विश्वास रखते हुए और अपने लक्ष्य को हमेशा ध्यान में रखते हुए वे पहले व्यापार, फिर व्यवसाय और आगे चल कर उद्योग के बेताज बादशाह बनते चले गए। देश के स्वतंत्रता संग्राम में भी उन्होंने राष्ट्रप्रेम, परोपकारिता और सक्रिय राजनीतिक भागीदारी की सच्ची भावना का प्रदर्शन करते हुए बढ़चढ़ कर भूमिका निभाई, बहुत से मारवाड़ी जेल गए तो कई शहीद भी हुए।

आज भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक तानेबाने में मारवाड़ी समाज बहुत गहरी जड़ें जमा चुका है। समाज को वापस लौटाने के अपने जन्मजात स्वभाव के कारण वे शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और व्यावसायिक प्रशिक्षण जैसी गतिविधियों में खुलकर आर्थिक योगदान दे रहे हैं। कुछ पुरानी परम्पराओं को त्यागकर और साथ ही बहुत सी परम्पराओं को जारी रखकर वे इस आधुनिक युग में भी नवीन और प्राचीन का एक अद्भुत सांस्कृतिक संगम बनाए हुए हैं। देश के सबसे सफल व्यावसायिक घरानों के कुशल नेतृत्व और अभिनव प्रयोगों और टेक्नालॉजी के विकास में अपनी गहरी दिलचस्पी के कारण वे अनेक देशों की सरकारों को आर्थिक विकास के गुर सिखा रहे हैं। देश के इतिहास और इसकी सामाजिक–आर्थिक आधारशिलाओं पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले बहुत से मारवाड़ियों में से कुछ प्रमुख हस्तियों के बारे में हमें यह पुस्तक विस्तार से बताएगी। हम इस समुदाय से जुड़ी बहुत–सी नई और अब तक अनजानी दिलचस्प और आश्चर्यजनक जानकारियों से भी परिचित होंगे।

मारवाड़ियों की नई पीढ़ियां, आज भी ऊंचे सपने देखते हुए अपने पूर्वजों द्वारा रखी गई नींव पर नए और भव्य निर्माण करने में जुटी हुई हैं। दिनोंदिन और ज्यादा तरक्की करते हुए वे नए क्षितिजों की तरफ बढ़ रही हैं। उनकी कुशल देखरेख और मार्गदर्शन में कितनी ही कल्याणकारी योजनाएं और ट्रस्ट समाज की सेवा और विकास में जुटे हुए हैं। पांच वर्षों के निरंतर शोध और अथक परिश्रम के बाद सामने आई यह पुस्तक पांच सौ से भी अधिक दुर्लभ रंगीन छायाचित्रों, कलाचित्रों और श्वेत–श्याम चित्रों, रेखांकनों और दस्तावेजों से सुशोभित है जो पहली बार प्रकाशित हो रहे हैं। कहना न होगा कि पाठकों के लिए यह किसी भव्य उपहार से कम नहीं है। यह पुस्तक उन सबके लिए भी एक प्रेरणा–स्रोत साबित होगी जो ऊंचा सोचने और आसमानी बुलंदियों को छूने में विश्वास रखते हैं।